क्यों-हिन्दी-क्यों

(व्यावहारिक और सैद्धांतिक स्वरूप)

क्यों-हिन्दी-क्यों

(व्यावहारिक और सैद्धांतिक स्वरूप)

संपादक

डॉ. ज्योति यादव
सहायक आचार्य (हिन्दी विभाग)
राजकीय महाविद्यालय, रावतसर
हनुमानगढ़ (राज.)

डॉ. विनोद खुड़ीवाल
सहायक आचार्य (अंग्रेजी विभाग)
राजकीय नेहरू मेमोरियल महाविद्यालय
हनुमानगढ़ (राज.)

2026

Siddhi Vinayak Publications

Publisher :

Siddhi Vinayak Publications

Kulchander, Hanumangarh (Rajasthan) 335063
83063-09470, 94611-09470
publicationssiddhivinayak@gmail.com

ISBN : 978-81-982071-3-5

© डॉ. ज्योति यादव एवं डॉ. विनोद खुड़ीवाल

Edition : 2026

Price : ₹ 499.00

Book Design, Typesetting & Layout: Kamal Jeet Singh

Publication Management: Dr. Dinesh Kumar Jakhar

Printer : Siddhi Vinayak Publications
(Printed Through: Skynet India)

Statutory Warning

- The information, news, knowledge, and facts published in this book have been thoroughly verified. However, if any information or fact has been published incorrectly, the publisher, author, or printer shall not be held responsible for any damage caused to any individual or organization.
- We believe that the material published in this book has been originally written by the author. In case of any copyright violation, the publisher shall not be held liable. Any disputes arising will be subject to the jurisdiction of Hanumangarh, Rajasthan.
- The author, publisher, printer, or seller shall not be liable for any damage or grievance caused by any omission or error in the facts or details published in the book.
- All Rights Reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means—electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise (except for mentions in reviews or edited excerpts in the media)—without the written permission of the publisher. Reproduction, photocopying, scanning, or reprinting of any part of this book through any means without the written permission of the publisher and author is a punishable offense under the Copyright Act.
- Before reproducing or using any part of this book, in any medium, it is mandatory to obtain written permission from the publisher.
- All responsibility (ideas/pictures etc.) for the published articles/papers will be of the authors themselves and in any controversial situation, the editorial board or the publisher will not be responsible.

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
	प्रस्तावना	(vi)
1	सामाजिक मनोविज्ञान और हिन्दी भाषा **डॉ. कमलेश यादव**	1
2	हिंदी क्यों (व्यावहारिक और सैद्धांतिक स्वरूप) **डॉ. विकास कुमार**	8
3	हिन्दी भाषा निर्माण और भाषावाद **पूजा शर्मा**	15
4	परीक्षा व्यवस्था और हिंदी भाषा **डॉ. संजू गाड़िया**	20
5	हिंदी भाषा ग्रामीण बनाम शहरी रूप **गीतांजली कोलीवाल**	28
6	भारतीय संस्कृति का विस्तार और हिन्दी भाषा **डॉ. अर्चना शर्मा**	32
7	शिक्षा नीतियाँ और हिंदी भाषा प्रावधान **निकिता**	37
8	मातृ भाषा और हिन्दी भाषा का अंतर्संबंध **निष्ठा**	46
9	हिंदी भाषा ज्ञान और रोजगार उद्यमिता **डॉ. शैना बजाज**	54
10	भारत में भाषा विवाद : एक शोधपरक अध्ययन **डॉ. दीपेन्द्र सोलंकी, डॉ. संजय कुमार और डॉ. संदीप**	66
11	हिंदी और रोजगार : भाषा, ज्ञान और समाज की बदलती जरूरतें **डॉ. अर्चना गोदारा**	76
12	हिंदी भाषाई क्षेत्र व राजनीति **दीपक**	84
13	समकालीन हिंदी बनाम डिजिटल लेखन **डॉ. ज्योति यादव**	93
14	विज्ञान और स्वास्थ्य में हिन्दी भाषा **डॉ. राहुल**	103

15	वैश्विक ICT और हिन्दी भाषा **डॉ. मोनिका राठौड़**	**111**
16	सार्वभौमिक बुनियादी विषय और हिंदी भाषा **सुनीता यादव**	**120**
17	Botanical Communication in India: The Problem of Scientific Terminology in Hindi **Dr. Deependra Solanki**	**129**
18	An Impact of Linguism on Employment in Entrepreneurship **Dr. Namrata Golyan**	**140**
19	Separation or Assimilation: A Study of Hindi vs. English Language **Dr. Vinod Khuriwal**	**150**

प्रस्तावना

'क्यों-हिंदी-क्यों (व्यावहारिक और सैद्धांतिक स्वरूप)' शीर्षक संपादित यह पुस्तक आज के समय की एक अत्यंत प्रासंगिक और विचारोत्तेजक पहल है। वैश्वीकरण, तकनीकी विकास, बाजारवाद और डिजिटल माध्यमों के तीव्र विस्तार के इस युग में भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं रह गई है, बल्कि वह संस्कृति, पहचान और वैचारिक चेतना की वाहक भी बन चुकी है। ऐसे में हिंदी की भूमिका, उसकी आवश्यकता और उससे जुड़े दायित्वों पर गंभीर विमर्श समय की माँग है।

हिंदी भारत की बहुसंख्यक जनता की भाषा होने के साथ-साथ एक समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा की प्रतिनिधि भी है। यह भाषा सदियों से जनभावनाओं, सामाजिक संघर्षों, लोकचेतना और राष्ट्रीय अस्मिता को अभिव्यक्त करती रही है, किंतु वर्तमान परिदृश्य में हिंदी अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है, शिक्षा में अंग्रेजी का बढ़ता प्रभुत्व, प्रशासनिक उपेक्षा, तकनीकी माध्यमों में सीमित प्रयोग और युवाओं में भाषायी हीनभावना जैसी समस्याएँ इसके सामने खड़ी है। इन परिस्थितियों में यह प्रश्न और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है कि आज हिंदी क्यों आवश्यक है और हमारे दायित्व क्या हैं।

इस संपादित पुस्तक में शामिल लेख हिंदी की सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, प्रशासनिक, तकनीकी और वैश्विक भूमिकाओं पर विविध दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। विद्वान लेखकों ने अपने-अपने अध्ययन और अनुभव के आधार पर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि हिंदी केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि वर्तमान की जरूरत और भविष्य की संभावना भी है। साथ ही, इस पुस्तक में यह भी रेखांकित किया गया है कि हिंदी का संरक्षण और संवर्धन केवल सरकारी नीतियों तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि समाज, शिक्षण संस्थानों, लेखकों, मीडिया और आम नागरिकों की साझा जिम्मेदारी है।

यह पुस्तक छात्रों, शोधार्थियों, शिक्षकों, साहित्यकारों और हिंदी प्रेमियों के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होगी। आशा है कि यह पुस्तक हिंदी के प्रति नई चेतना जाग्रत करेगी और पाठकों को यह सोचने के लिए प्रेरित करेगी कि हम अपनी भाषा के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन किस प्रकार कर सकते हैं।

अंत में, हम इस पुस्तक के सभी योगदानकर्ताओं के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं, जिनके विचारों और लेखन से यह कृति सार्थक रूप ले सकी। यह विश्वास है कि 'क्यों-हिंदी-क्यों' का यह विमर्श हिंदी के भविष्य को सशक्त और समृद्ध बनाने में एक सकारात्मक भूमिका निभाएगा।

हनुमानगढ़ — डॉ. ज्योति यादव एवं डॉ. विनोद खुड़ीवाल

दिनांक : 24.06.2026 — (संपादक)